आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna.2019
वर्ष 5, अंक 1–2, जून–दिसम्बर 2019, पृ. 25–29

सांस्कृतिक गतिविधियों पर कोरोना का प्रभाव

श्रीपाल चौहान*

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र सांस्कृतिक गतिविधियों पर कोरोना के प्रभाव पर आधारित है। सांस्कृतिक कार्यकम न केवल धर्म निष्ठा को परिपुष्ट करते हैं वरन मानवीय जीवन की विभिन्न समस्याओं में भी समाधान प्रस्तुत करते हैं। इस शोध–पत्र में कोरोना काल में अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा चलाये गये विभिन्न सांस्कृतिक कार्यकम और गतिविधियों का विश्लेशण करने का प्रयास किया गया है। ऐसे सांस्कृतिक कार्यकमों से कोरोना काल में आमजन को न केवल रोग से निदान पाने में सहायता मिली वरन इन विषम परिस्थितियों में मानसिक बल और आशा का संचार भी प्राप्त हुआ। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य इन सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रभाव का अध्ययन तथा विश्लेषण करना है।

मूल अवणारणाएंः कोरोना; सांस्कृतिक गतिविधियां; सूचना एवं संचार तकनीकी

अखिल विश्व गायत्री परिवार की विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियाँ और कार्यक्रम कोरोना काल में भारत सरकार की गाइडलाईन के अनुसार संचालित किये गये। व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं के उन्मूलन हेतु संचालित इन कार्यक्रमों पर कोरोना का प्रभाव स्पष्ट रुप से देखा गया। विश्व के अनेक देशों तथा भारत भर में स्थापित पाँच हजार से अधिक शक्तिपीठों द्वारा सामाजिक सुधार के विभिन्न कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं। अखिल विश्व गायत्री परिवार के केन्द्र शान्तिकुँज द्वारा भी प्रतिमाह प्रशिक्षण शिविरों का संचालन किया जाता है। इन प्रशिक्षण शिविरों में नौ दिवसीय संजीवनी साधना शिविर, एक मासिक युग शिल्पी प्रशिक्षण शिविर तथा तीन मासिक संगीत साधना शिविर मुख्य रुप से संचालित किये जाते है।

वैश्विक महामारी कोरोना के प्रभाव को जानने के लिए हमने सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों को कोरोना काल में संचालित किये जानने की प्रक्रिया का विश्लेषण किया। जिसमें यह पाया गया कि उपरोक्त कुछ कार्यक्रम आनलाईन माध्यम द्वारा संचालित किये गये। इस आनलाईन माध्यम द्वारा कर्मकाण्ड प्रशिक्षण, कार्यकर्ताओं की गोष्ठीयाँ, महत्वपूर्ण त्योहारों पर सम्बोधन, संगीत प्रशिक्षण की कार्यशालाएँ ऐसे ही अनेक कार्यक्रम अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुँज हरिद्वार, द्वारा देश भर में संचालित किये गये। इन कार्यक्रमों से जुड़ने वाले लोगों ने इन्टरनेट के माध्यम से जूम और

*डा0 श्रीपाल चौहान, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, समाजविज्ञान विभाग, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, कटनी, म0प्र0।

गूगलमीट तथा यू–टयूब से जुडकर घर पर ही इन सभी सांस्कृतिक गतिविधियों के बहुत प्रभावित किया जिसका विवरण इस प्रकार हैः–

1. सामाजिक स्तर पर यह विश्लेषण किया जाये तो यह पाया गया कि इस गतिविधियों से जुडने वाले परिवारों में अधिकतर सदस्यों ने इसमें प्रतिभाग किया क्योंकि कोरोना के कारण 'वर्क फ्राम होम' की सुविधा होने की वजह से वे घर पर ही रहें और इस सांस्कृतिक गतिविधियों का भरपूर लाभ उठाया।
2. इन्टरनेट के प्रयोग तथा डिजीटल एप्लीकेशन के प्रयोग को बहुतायत में सीखा और प्रयोग किया गया। इन एप्लीकेशनों ने सांस्कृतिक गतिविधियों को घर–घर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया।

कोरोना महामारी ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आर्थिक पक्ष को भी प्रभावित किया है। अनेक व्यक्तियों के रोजगार बंद होने के बाद भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों हेतु दी जाने वाली सहायता राशि में भारी बढ़ोतरी हुई। सक्षम व्यक्तियों ने अपनी राशि आनलाइन माध्यम से भेजना जारी रखा तथा जनहित के कार्यों में बढ़–चढ़ कर सहयोग किया। इस प्रकार सांस्कृतिक गतिविधियाँ कोरोना के कारण आर्थिक रुप से पुष्ट हुई और आने वाली सहयोग/दान राशि में भी भारी बढ़ोतरी दर्ज की गयी। यद्यपि कोरोना के कारण सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन रुक गये और वायरस के फैलने के भय ने भी इन कार्यक्रमों के निर्माण और आयोजनों पर विराम लगा दिया था, तथापि आनलाईन माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रमों के निर्माण और प्रसारण में प्रगति हुई और लाखों प्रतिभागियों के कारण ये सभी आयोजन सफल सिद्व हुए।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की आनलाईन पहुँच के कारण आमजनों के शारिरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा। कोरोना महामारी ने जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति पर भय और अनिश्चितता का आक्रमण किया उसके उन्मूलन में सांस्कृतिक संगठनों ने अपनी गतिविधियों के माध्यम से उस भय और अनिश्चितता को दूर करने तथा भय को समाप्त करने में महति भूमिका का निर्वहन किया।

अनेक टी० वी० चैनलों, सोशल वेबसाइटस और अन्य डिजीटल माध्यमों ने विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रमों का प्रसारण कर इस काल में इनकी प्रांसगिकता को सिद्व किया और आमजन के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में आशातीत लाभ पहुँचाया। इन सांस्कृतिक गतिविधियों ने कोरोना काल में भी आनलाईन माध्यम अपना कर अपनी उपदेयता को न केवल सिद्व किया वरन इस काल में आयी चुनौतियों को एक अवसर बनाकर आमजन में अपनी पहुँच को बढ़ाया।

भारत सरकार और मेडिकल चिकित्सकीय प्रतिबन्धों ने भी कोरोना काल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों/गतिविधियों के निर्माण और आयोजन पर अपना प्रभाव डाला है। ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम जिनके आयोजन में व्यक्तियों और सार्वजनिक स्थलों की बड़ी आवश्यकता पड़ती है, उन सभी को कोरोना काल में स्थगित करना पड़ा इन कार्यक्रमों को आंशिक रुप से केवल डिजीटल माध्यमों द्वारा ही प्रसारित किया गया। इस प्रकार इन प्रतिबन्धों ने इस काल में सांस्कृतिक गतिविधियों को न केवल स्थगित कराया वरन उनके आयोजन की प्रक्रिया में भारी–उल्टफेर कर केवल आनलाईन माध्यम से प्रसारित किये जाने की व्यवस्था बनानी पड़ी।

वैश्विक महामारी के इस काल में अखिल विश्व गायत्री परिवार ने अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ–साथ सामाजिक सहायतार्थ अपने अनेक अभियानों के माध्यम से लोगों को त्वरित

सहायता उपलब्ध करायी और उनके साथ इस संकट में खड़े होकर सामाजिक समरसता का परिचय दिया।

इन सामाजिक अभियानों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः–

1 माँ अन्नपूर्णा योजना– जिसमें पका भोजन–खिचड़ी तथा दलिया आदि को ऐसे क्षेत्रों में बाँटा गया जहाँ गरीब और मजदूर परिवार के लोग निवास करते थे। कोरोना काल में उनकी भोजन की समस्या को दूर करने का प्रयास किया गया।

2 साबुत अनाज और दैनिक उपभोग की वस्तुओं के पैकेट बनाकर, बस्तियों और ऐसे ही अनेक स्थानों पर वितरित किये गये। इससे गरीब और मजदूर परिवारों की दैनिक आवश्यकता को पूरा किया गया।

3 अपने ब्लड डोनेशन ग्रुपों द्वारा विभिन्न चिकित्सालयों में जिससे क्रिटिकल अवस्था में भर्ती मरीजों को तुरंत ब्लड की आवश्यकता को पूरा किया गया, इससे हजारों की संख्या में लोगों को लाभ पहुँचा।

4 ग्रह–ग्रह गायत्री यज्ञ अभियान के माध्यम से भी इस कोरोना काल में आमजन को अपने घर पर ही स्वयं यज्ञ करने को प्रोत्साहित किया गया। यज्ञ को करने की सरल लघु विधि आनलाइन प्रसारित की गई। इस डिजिटल माध्यम से हजारों–लाखों परिवारों ने अपने घर पर ही इस विधि अनुसार यज्ञ किया जिससे यज्ञ परम्परा में वशद्वि के साथ–साथ समाज में व्यक्ति के स्वास्थ्य में आमूल–चूल लाभ हुआ। हम जानते ही हैं कि यज्ञ के माध्यम से जिन सामग्रियों का उपयोग किया जाता है वे सभी यज्ञ में भस्मीभूत होकर हमारे स्वास्थ्य के साथ ही आस–पास के वातावरण को भी विषाणु रहित बनाती है और सभी सभांवित बीमारियों से बचाव करती है। इस प्रकार यज्ञ जैसी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक गतिविधि ने इस महामारी में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया और भारतीय संस्कृति को इस अनूठी परम्परा को जन–जन में स्थापित कराने में अग्रणी भूमिका अदा की।

अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा इस वैश्विक महामारी के समय लघु साधना अनुष्ठान आयोजित कराये गये। गूगल फार्म द्वारा पंजीकरण करके साधना अनुष्ठान का मार्गदर्शन आनलाईन प्रदान किया गया। बड़ी संख्या में लोगों ने इसमें प्रतिभाग किया और इस साधना अनुष्ठान कार्यक्रम ने इस महामारी में लोगों के मनोबल को बढ़ाया और उनके स्वास्थ्य में अत्यंत लाभ पहुँचाया।

गायत्री परिवार के केन्द्र शान्तिकुँज द्वारा आनलाइन माध्यम से बाल संस्कार शालाओं का आयोजन किया गया। गूगल फार्म के माध्यम ये बच्चों के पंजीकरण किये गये तथा एक सप्ताह के सेशन आयोजित किये गये। जिसमें प्रतिदिन तीन सेशन रखे गये। कोरोना काल में इस सांस्कृतिक गतिविधि के द्वारा लाखों बच्चों को संस्कारों का प्रशिक्षण दिया गया। मनोरंजन के साथ–साथ संस्कारों के बीजारोपण ने इस महामारी के समय बच्चों के मन–मस्तिष्क को निर्भय बनाये रखा और उनके समय का भी अच्छा उपयोग किया गया। बाल संस्कार शालाओं के डिजिटल आयोजन में जूम, यू–टयूब तथा फेशबुक के माध्यम से बच्चों को जोड़कर उनको इस महत्वपूर्ण सांस्कृतिक गतिविधि में सहभागिता करायी गयी।

कोरोना के कारण इस गतिविधि में बच्चों की संख्या में वृद्वि हुई तथा उनको आनलाइन माध्यमों की जानकी, उपयोगिता और उनका प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त हुआ।

अखिल विश्व गायत्री परिवार ने आचार्य जी द्वारा लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों का आनलाइन स्वाध्याय कार्यक्रम चलाया गया। जिसमें गूगल मीट और जूम द्वारा इसमें रुचि रखने वाले

परिजनों को साप्ताहिक और दैनिक रुप में एक निश्चित समय पर जोड़कर सम्बन्धित पुस्तक का वाचन करके यह क्रम पूर्ण किया गया।

गायत्री परिवार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धुरी कर्मकाण्ड प्रशिक्षण जिसमें यज्ञ, नामकरण, जन्मदिन, अन्नप्रासन, विद्यारम्भ, विवाह आदि संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जाता है। वैश्विक महामारी कोरोना काल में अखिल विश्व गायत्री परिवार के केन्द्र शान्तिकुँज हरिद्वार से यह कर्मकाण्ड प्रशिक्षण कार्यक्रम आनलाईन माध्यम से संचालित किये गये। इसमें गूगल पंजीकरण फार्म द्वारा नामांकन करके जूम तथा यू–टयूब द्वारा प्रतिभागियों/प्रशिक्षणार्थियों का प्रशिक्षण किया गया। एक महीने तक की समयावधि में एक घण्टा प्रतिदिन सांयकाल 6 से 7 तक यह प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये गये।

प्रस्तुत शोध–पत्र के लेखक ने भी कर्मकाण्ड प्रशिक्षण के इस यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम में पंजीकरण कराकर आनलाइन माध्यम से इसमें सहभागिता की तथा यज्ञ कराने और स्वयं करने की पूरी प्रक्रिया का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सांस्कृतिक गतिविधियों पर कोरोना का प्रभावः प्रशिक्षण सत्रों का विवरणः–

1 तीर्थ अवगाहन सावित्री साधना	–	5 दिवसीय
2 जीवन साधना सत्र	–	2 दिवसीय
3 संगीत सत्र	–	3 महीना
4 परित्राजक सत्र	–	1 महीना
5 संजीवनी साधना सत्र	–	1 दिवसीय
6 युग शिल्पी सत्र	–	1 महीना
7 अन्तः ऊर्जा जागरण सत्र	–	5 दिवसीय
8 बाल संस्कार, शाला शिक्षक प्रशिक्षण सत्र	–	साप्ताहिक
9 जीवन प्रबन्धन सत्र	–	
10 नारी जागरण	–	
11 युवा चेतना शिविर	–	
12 स्वध्याय सन्दोह (भगवतगीता)	–	
13 लोकसेवी प्रशिक्षण सत्र	–	
14 योगा स्वास्थ्य शिविर	–	
15 दांपत्य जीवन प्रबन्धन सत्र	–	
16 यज्ञ चिकित्सा प्रशिक्षण	–	
17 साहित्य बोध सत्र	–	
18 प्राकृतिक चिकित्सा शिविर	–	
19 स्वास्थ्य एवं स्वावलम्बन प्रशिक्षण शिविर	–	
20 कुटी प्रवेश शिविर	–	एक दिवसीय
21 कर्मकाण्ड प्रशिक्षण	–	
22 कार्यकर्ता गोष्ठी	–	
23 विशेष पर्व त्योहारों पर सम्बोधन	–	

24 अपने परिजनों को कोरोना काल में अपने स्वास्थ्य और राष्ट्रीय स्तर पर जिम्मेदार नागरिक के रुप में जागरुक करना

25 मिशन की गतिविधियों का डिजीटल प्रचार–प्रसार

प्रस्तुत शोध–पत्र के सार रुप में यह कहा जा सकता है कि कोरोना काल में सांस्कृतिक गतिविधियों ने न केवल अपना उद्देश्य पूरा किया वरन अपने नये स्वरुप (आनलाइन माध्यम) में जन–जन के पास पहुँचकर आम आदमी के जीवन में यथासम्भव लाभ पहुँचाया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के विभिन्न प्रकारों ने इस विपत्ति के समय आनलाइल माध्यम से न केवल अपनी प्रसारण क्षमता को बढ़ाया वरन आम जन में अपनी पहुँच को बढ़ाकर अपनी उपदेयता को सिद्व किया। मानव जीवन और समाज के सांस्कृतिक पक्ष को परिपुष्ट करने वाली विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों ने अपने स्वरुप में परिवर्तन कर विभिन्न आनलाईन माध्यमों का उपयोग कर जन–मानस में अपनी उपयोगिता बढ़ाई और भय के इस माहौल को निर्भय कर धर्म और अध्यात्म की महत्वपूर्ण भूमिका को बनाये रखा।